

① उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-

(1) जिह्वा/ अन्य अवयवों द्वारा श्वास के अवरोध के आधार पर:-

- | | |
|------------------------|---|
| (i) → स्पर्शी | → कर्क, लर्क, लर्क और पर्क के प्रारम्भ के चारों वर्ण-①⑥ |
| (ii) → संघर्षी | → श, ष, स, ह |
| (iii) → स्पर्श-संघर्षी | → च, छ, ज, झ |
| (iv) → नासिक्य | → ङ, ञ, ण, न, म |
| (v) → उत्क्षिप्त | → ङ, ञ |
| (vi) → प्रकम्पित | → र |
| (vii) → पार्श्विक | → ल |
| (viii) → संघर्षहीन | → य, व |

(i) **स्पर्शी व्यंजन** - वे व्यंजन जिनके उच्चारण में विभिन्न उच्चारण अवयवों का स्पर्श किया जाता है, स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं-

जैसे- क, ख, ग, घ, ङ, ङ, ङ, ङ (ङ, ङ) त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ - (16)

(ii) **संघर्षी व्यंजन** - वे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकलता पर आ जाते हैं कि मार्ग छोटा हो जाता है और वायु घर्षण / संघर्ष के साथ बाहर निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं-

जैसे- श, ष, स, ह **विशेष** - इन्हें ऊष्मर्ष भी कहते हैं।

(iii) **स्पर्श-संघर्ष-** वे व्यंजन जिनके उच्चारण में उच्चारण का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाक्ता भाग संघर्षी हो जाता है, स्पर्श-संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं-

जैसे- च, छ, ज, झ

(iv) **नासिक्य व्यंजन-** वे व्यंजन जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख वेग नासिका से निकलता है, नासिक्य व्यंजन कहलाते हैं-

जैसे- ड, ञ, ण, न, म

विशेष- प्रत्येक वर्ग का पाँचवाँ वर्ण होने के कारण इन्हें पंचमवर्ग भी कहते हैं।

(v) **उत्क्षिप्त व्यंजन** - उत्क्षिप्त का अर्थ - 'फेंका हुआ'

वे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा ऐसा महसूस कराती है जैसे इन्हें फेंक रही हो, उत्क्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं - जैसे = 'ड़, ढु'

विशेष - इन्हें ताडनजात / बिगुण / बिपुष्प वर्ण भी कहते हैं।

(vi) **प्रकम्पित वर्ण** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में जिह्वा को दो-तीन बार कम्पन्न करना पड़ता है अर्थात् उच्चारण से पूर्व जिह्वा कम्पन्न कराती है, प्रकम्पित वर्ण कहलाते हैं - जैसे = 'र'

विशेष - इसे लुठित वर्ण भी कहते हैं।

(vii) **पार्श्विक वर्ण** - पार्श्व का अर्थ - 'पास'

वे वर्ण जिनके उच्चारण में जिह्वा मसूड़े को छूती है और हवा का प्रमुख वेग जिह्वा के आस-पास या अगल-बगल से निकल जाता है, पार्श्विक वर्ण कहलाते हैं - जैसे - 'भ'

(viii) **संघर्षहीन वर्ण** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में जिह्वा को संघर्ष नहीं करना पड़ता अर्थात् स्वरों से मिलता-जुलता योग रहता है, संघर्षहीन वर्ण कहलाते हैं - जैसे - य, व

विशेष - स्वरों से मिलता-जुलता योग होने के कारण इन्हें अर्द्ध स्वर भी कहते हैं।

② स्वर तंत्रियों में कम्पन्न के आधार पर- दो भेद



(i) अघोष - घोष का अर्थ - 'गूँज/नाद/कम्पन्न'

वे वर्ण जिनके उच्चारण में गूँज/नाद/कम्पन्न नहीं होता है, अघोष वर्ण कहलाते हैं-

जैसे - प्रत्येक वर्ण का पहला, दूसरा (क, ख, च, छ, ट, ठ, ड, ध, प, फ)
और श, ष, स - ⑬

(ii) घोष/सघोष-

वे वर्ण जिनके उच्चारण में गूँज/नाद/कम्पन अधिक होता है, घोष/सघोष वर्ण कहलाते हैं-

जैसे- प्रत्येक वर्ण का तीसरा/चौथा/पाँचवाँ वर्ण (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, द, ध, न, ब, भ, म) य, र, ल, व, ह और सभी स्वर- (31)

③ प्राणवायु/श्वास के आधार पर:- दो भेद



(i) अल्पप्राण वर्ण- वे वर्ण जिनके उच्चारण में मुख विवर से कम मात्रा में वायु बाहर निकलती है, अल्पप्राण वर्ण कहलाते हैं-

जैसे- प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ (क, ग, ङ, च, ज, झ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म) य, र, ल, व और सभी स्वर - (30)

(ii) महाप्राण वर्ण -

वे वर्ण जिनके उच्चारण में मुख-विवर से अधिक मात्रा में वायु बाहर निकलती है, महाप्राण वर्ण कहलाते हैं -

जैसे - प्रत्येक वर्ण का दूसरा, चौथा (व्, घ्, ढ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्)
और श्, ष्, स्, ह् - (14)

② उच्चारण स्थान के आधार पर:-

क्र.स.	उच्चारण सूत्र	उच्चारण स्थान
①	अकुहविसर्जनीयानां कंठ्य ↓ अ, आ, कर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) ह और :	कंठ
②	इद्युयशानां तालु ↓ इ, ई, चर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) य, श	तालु
③	ऋतुरषाणां मूर्ध्नी ↓ ऋ, ए र्ग (ए, ऐ, ओ, औ, ऋ, ए) र, य	मूर्ध्नी

क्र.सं.	उच्चारण सूत्र	उच्चारण स्थान
④	तुलसानां दन्त्य ↓ तर्क (त, थ, द, ध, न) भ, स	दन्त
⑤	उपपद्यमानयानां ओष्ठ ↓ उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ (होंठ)
⑥	ड, ञ, ण, न, म	नासिका
⑦	वकारस्य दन्तोष्ठ ↓ व	दन्त ओष्ठ ↓ ऊपर उ नीचे का

क्र.सं.

उच्चारण सूत्र

⑧

एदैलोकंठतालु

↓
ए/ऐ

⑨

ओदैलोकंठोष्ठ

↓
औ/औ

⑩

र, न, ल, स, ज

⑪

ह

उच्चारण स्थान

कंठ और तालु

अ/आ + इ/ई

↓
ए

कंठ और ओष्ठ

अ/आ + उ/ऊ

↓
औ

वत्स्य (मसूड़ा)

काकल्य / अलिजिह्वा

* यदि ऊपर के होंड को काट दिया जाए तो किस वर्ण के उच्चारण में असुबिधा होगी -

(i) ~~व~~ (ii) ~~ख~~ (iii) व और ~~ख~~ दोनों (iv) इनमें से कोई नहीं

* यदि नीचे के होंड को काट दिया जाए तो किस वर्ण के उच्चारण में असुबिधा होगी -

(i) व (ii) ~~ख~~ (iii) ~~व~~ और ~~ख~~ दोनों (iv) इनमें से कोई नहीं